

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 25, प्रकाशितवाक्य 19:11-21, योद्धा का विवरण और युद्ध का विवरण

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह प्रकाशितवाक्य 19:11-21 पर सत्र 25 है। योद्धा का वर्णन तथा युद्ध अथवा न्याय का वर्णन।

अध्याय 19 और श्लोक 11 से 21 में, हमें, एक अर्थ में, अध्याय 17 और 18 के चरमोत्कर्ष और 19 के पहले भाग से परिचित कराया जाता है। अध्याय 17 और 18 बेबीलोन के, रोम के बेबीलोन के विनाश पर केंद्रित हैं। अब ऐसा लगता है कि अध्याय 19, अध्याय 19 और श्लोक 11 से 21 इसके सहयोगियों के न्याय के लिए, उन राष्ट्रों के न्याय के लिए समर्पित होंगे जिन्होंने इसके साथ व्यभिचार किया था।

तो सबसे पहले, बेबीलोन को 17 और 18 में फैसला मिलता है, और यह एक प्रकार का आदर्श बन जाता है, अभी के लिए, यह फैसला बाकी दुनिया पर पड़ेगा और विशेष रूप से उन लोगों पर जो इसके सहयोगी थे और जिन्हें व्यभिचार करने के लिए बहकाया गया था यह। इसलिए, अध्याय 19, एक अर्थ में, किसी ऐसी चीज़ का प्रतिनिधित्व नहीं करता है जो अध्याय 17 और 18 के बाद कालानुक्रमिक रूप से घटित होती है, जहाँ तक हम अध्याय 17 और 18 को दुनिया के अंत की पृष्ठभूमि में रोम का प्रतिनिधित्व करते हुए देखते हैं। उस अर्थ में, अध्याय 19 ऐतिहासिक रोम के विनाश का अनुसरण करता है।

लेकिन दूसरी ओर, अगर हम रोम के विनाश के साथ-साथ दुनिया के अंत में बेबीलोन के अंतिम विनाश को भी समझते हैं, तो अध्याय 19 इसका स्वाभाविक परिणाम है। तो फिर, अध्याय 17 और 18 बेबीलोन रोम का विनाश है, लेकिन फिर इसके साथ शेष पृथ्वी को भी न्याय मिला। और यहीं अध्याय 19 आता है।

अध्याय 19, श्लोक 11 से 21 में, ईश्वर और उसके लोगों के विरोध में बुराई की सभी ताकतों और पूरी मानवता, सभी विद्रोही, घमंडी, मूर्तिपूजक मानवता जो ईश्वर का विरोध करती है और अब उसके लोगों पर अत्याचार करती है, ईश्वर के निर्णय के विषय हैं। अध्याय 19. अध्याय 19:11 से 21 तक के इस खंड को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। श्लोक 11 से 16 में पहला भाग मुख्य चरित्र का वर्णन है, और वह योद्धा यीशु मसीह है, जो एक सफेद घोड़े पर बैठकर आता है, और उसका विस्तार से वर्णन किया गया है।

और फिर अंत में, 17 और उसके बाद में, युद्ध का ही वर्णन किया गया है, जिसे हम एक क्षण में देखेंगे कि यह वास्तव में कोई बड़ी लड़ाई नहीं है। लड़ाई वास्तव में शुरू होने से पहले ही खत्म हो जाएगी। तो हम उन दो खंडों से अवगत होंगे, 11 से 16, उस योद्धा का वर्णन जो युद्ध करने के लिए निकलता है, जो कि सफेद घोड़े पर सवार है।

और फिर दूसरे, श्लोक 17 और उसके बाद में, युद्ध का ही वर्णन किया गया है। जिस तरह से यह खंड स्थापित किया गया है, मैं आपको सुझाव दूंगा कि इस खंड का केंद्र बिंदु श्लोक 17 और उसके बाद की लड़ाई नहीं है, बल्कि योद्धा का वर्णन है, सफेद घोड़े पर यीशु मसीह, सफेद पर सवार श्लोक 11 से 16 में घोड़ा। उसका वर्णन अध्याय 19 का सबसे प्रमुख तत्व और केंद्र बिंदु है।

अब, अध्याय 19, श्लोक 11, फिर एक महत्वपूर्ण विशेषता से शुरू होता है, और वह श्लोक 11 कहता है, मैंने स्वर्ग को खुलते देखा। दूसरी जगह हमने पाया कि भाषा अध्याय 4, श्लोक 1 और 2 में थी, जहां जॉन स्वर्ग को खुला देखता है, और फिर उसे एक दर्शन देखने के लिए स्वर्ग में बुलाया जाता है, और वह दिव्य सिंहासन कक्ष देखता है। स्वर्ग के खुलने का यह उल्लेख, मुझे लगता है, एक महत्वपूर्ण विशेषता है और रहस्योद्घाटन की पुस्तक के एक महत्वपूर्ण खंड और चरमोत्कर्ष को चिह्नित करता है।

और वह है, अध्याय 19, श्लोक 11 से शुरू करते हुए, मेरी राय में, प्रकाशितवाक्य की बाकी किताब छवियों की एक श्रृंखला के बारे में होगी जो इतिहास के अंत में मसीह की वापसी के प्रभावों को चित्रित करती है। इसलिए मुझे लगता है कि अध्याय 19 में श्लोक 11 इसका परिचय है; स्वर्ग के खुले होने से, यह एक नए दृश्य, एक नए महत्वपूर्ण दृश्य को चिह्नित करता है, जैसा कि अध्याय 4 में हुआ था, फिर भी अब स्वर्ग के खुले होने के इस दृश्य के परिणामस्वरूप जॉन ऊपर नहीं जाएगा और स्वर्गीय दुनिया को देखेगा, अब इसका परिणाम मसीह की वापसी है इतिहास के अंत के लिए भगवान की योजना को पूरा करने के लिए। इतिहास के लिए परमेश्वर की मुक्तिदायी योजना का परिणाम न्याय और मुक्ति के रूप में सामने आया।

इसलिए, जैसा कि मैंने कहा, मुझे लगता है कि अध्याय 19 और श्लोक 11 के साथ, अब से सब कुछ मसीह के दूसरे आगमन पर होता है। और जो हम खोजने जा रहे हैं वह कई दृश्य हैं, जो एक बार फिर, यहां से शुरू होकर, अध्याय 21 तक ले जाते हैं, कई दृश्य जो आवश्यक रूप से एक दूसरे के बाद कालानुक्रमिक रूप से अनुसरण नहीं करते हैं। दूसरे शब्दों में, कई दृश्य जो आवश्यक रूप से कालानुक्रमिक सत्र में होने वाली घटनाओं को चित्रित नहीं करते हैं।

इसके बजाय, ऐसा लगता है जैसे लेखक ने मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होता है इसकी व्याख्या और व्याख्या करने के लिए कई छवियों का सहारा लिया है। या मसीह के दूसरे आगमन का क्या अर्थ है? यह क्या पूरा करता है? इसके परिणाम क्या हैं? लेखक कई दृश्यों के माध्यम से, इतिहास को समाप्त करने के लिए, भगवान की मुक्ति योजना को पूरा करने के लिए, मसीह के आने के अर्थ का पता लगाने के लिए अलग-अलग छवियां लेगा। तो, अध्याय 19 और श्लोक 11 फिर एक महत्वपूर्ण खंड शुरू करते हैं और वास्तव में इसका अपना अध्याय विभाजन हो सकता है, मुझे लगता है।

लेकिन मैं जो करना चाहता हूं वह अध्याय 19 को पढ़ना है क्योंकि हमने अन्य अनुभाग पढ़े हैं ताकि आपको पाठ का प्रवाह मिल सके। और आप केवल इसमें कूदने और इसके सभी विवरणों का विश्लेषण करने की कोशिश करने के बजाय, पाठ के प्रभाव की कल्पना करने और महसूस करने में सक्षम हैं।

तो, अध्याय 19, श्लोक 11 से शुरू होता है
 , यह जॉन का अंतिम निर्णय दृश्य का वर्णन है। मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था जिसका सवार वफादार और सच्चा कहलाता था। वह न्याय से न्याय करता, और युद्ध कराता है; उसकी आंखें धधकती हुई आग के समान हैं, और उसके सिर पर बहुत से मुकुट हैं।

उस पर एक ऐसा नाम लिखा है जिसे उसके अलावा कोई नहीं जानता। वह खून से लथपथ लबादा पहने हुए है और उसका नाम परमेश्वर का वचन है। स्वर्ग की सेनाएँ सफेद घोड़ों पर सवार और सफेद और साफ़ सफेद मलमल पहने हुए उसके पीछे चल रही थीं।

उसके मुँह से राष्ट्रों को मारने के लिये एक तेज़ तलवार निकली। वह लोहे के राजदण्ड से उन पर शासन करेगा। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के क्रोध की मदिरा के कुंड में रौंदता है।

उसके वस्त्र और जाँघ पर उसका नाम लिखा है, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु। तो यह योद्धा या मुख्य व्यक्ति, यीशु मसीह का वर्णन है, जो युद्ध करने आता है।

फिर, श्लोक 17 में

, मैंने एक देवदूत को धूप में खड़ा देखा। यह भाग युद्ध का वर्णन होगा। उस ने आकाश में उड़नेवाले सब पक्षियोंको ऊँचे शब्द से चिल्लाकर कहा, आओ, परमेश्वर के बड़े भोज के लिये इकट्ठे हो जाओ, कि तुम राजाओं, सेनापतियों, और शूरवीरों, घोड़ों, और सवारों, और का मांस खाओ। सभी लोगों का शरीर, स्वतंत्र और गुलाम, छोटा और बड़ा।

फिर मैं ने उस पशु और पृथ्वी के राजाओं और उनकी सेनाओं को सफेद घोड़े के सवार और उसकी सेना से युद्ध करने के लिये इकट्ठे होते देखा। परन्तु वह पशु पकड़ लिया गया, और उसके साथ झूठा भविष्यद्वक्ता भी पकड़ा गया, जिसने उसकी ओर से चमत्कारी चिन्ह दिखाए थे।
 रहस्योद्घाटन 13.

इन चिन्हों से उसने उन लोगों को भरमाया जिन पर उस पशु की छाप लगी थी और जो उसकी मूरत की पूजा करते थे। उन दोनों को जीवित ही जलती हुई गंधक की ज्वलंत झील में फेंक दिया गया। फिर, सफेद घोड़े पर सवार के मुँह से निकली तलवार से उनमें से बाकी लोगों को मार डाला गया।

और सब पक्षियों ने उनका मांस खा लिया। अब, दिलचस्प बात यह है कि, हममें से जो यीशु के बारे में सुसमाचार की छवि, एक सौम्य मेमने या किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचते हैं जिसके चारों ओर बच्चे इकट्ठे हैं, और जो कहता है, मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो क्योंकि यह है प्रकाश, हम मनुष्य के पुत्र के दर्शन या यीशु के दर्शन के लिए तैयार नहीं हैं जिसे हम अब अध्याय 19 में देखते हैं। उसे अब सौम्य चरवाहे और दयालु यीशु के अलावा कुछ भी प्रस्तुत किया गया है जो बच्चों को पकड़ता है और कुछ बातें कहता है वह सुसमाचार में करता है।

भले ही आप सुसमाचार पढ़ते हों, ऐसे बहुत से स्थान हैं जहां यीशु हमें आने वाले फैसले के बारे में चेतावनी देते हैं, लेकिन वास्तव में यीशु के उस दर्शन के लिए हमें तैयार करने के लिए कुछ भी नहीं है जो हम यहां देखते हैं। शायद ही आपको यीशु की यह तस्वीर सना हुआ ग्लास खिड़कियों या हमारे चर्चों में लटके चित्रों पर मिले।

हम यीशु को मेघों को पकड़े हुए या ऐसा ही कुछ देखना पसंद करेंगे। लेकिन अब हम इतिहास के अंत में यीशु को अपनी सारी महिमा में, एक सफेद घोड़े पर सवार होकर, जानबूझकर बाकी दुनिया के खिलाफ और अपने दुश्मनों के खिलाफ युद्ध करने के लिए आते हुए देखते हैं। यह तथ्य कि वह एक सफेद घोड़े पर है, स्पष्ट रूप से रहस्योद्घाटन के साथ कहीं और इसके संबंध का संकेत देता है।

हम युद्ध के दृश्यों में घोड़ों की भूमिका पहले ही देख चुके हैं। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य के अध्याय 6 की पहली मुहर में, एक सवार घोड़े पर निकलता है और वह स्पष्ट रूप से एक सफेद वस्त्र पहने हुए है और उसके पास एक धनुष और तीर है। वह स्पष्ट रूप से युद्ध और विनाश पर आमादा है।

अध्याय 9 में, हमने राक्षसी घुड़सवार सेना, घोड़े और सवार देखे, जिन्हें लेखक ने स्पष्ट रूप से राक्षसी प्राणियों से जोड़ा है। इसलिए प्रकाशितवाक्य में घोड़े पर सवार स्पष्ट रूप से विजय, युद्ध और हार का प्रतीक है। लेकिन अब हम देखते हैं कि रोमन साम्राज्य के विपरीत, राक्षसी घुड़सवार सेना के विपरीत, अब यीशु अपने घोड़े पर निकलते हैं और युद्ध करने और अपने दुश्मनों को हराने के लिए बाहर आते हैं।

मैंने आपको सुझाव दिया कि श्लोक 11 से 16 संभवतः इस खंड का फोकस हैं। यानी मुख्य फोकस लड़ाई और युद्ध पर नहीं रहेगा। वास्तव में, हम देखेंगे कि वास्तव में बहुत अधिक लड़ाई नहीं है; वास्तव में कोई युद्ध नहीं है।

और मैं आपको सुझाव देना चाहता हूं कि मुझे लगता है कि यह युद्ध चित्रण किस ओर इशारा कर रहा होगा और क्या प्रतीक और संकेत दे रहा होगा। लेकिन इस अध्याय का ध्यान 11 से 16 में योद्धा के वर्णन पर है। और जिस तरह से मसीह का वर्णन किया गया है वह कई पुराने नियम के ग्रंथों के माध्यम से है जो विशेष रूप से भगवान को एक योद्धा के रूप में संदर्भित करते हैं, लेकिन लेखक ने कुछ छवियों का भी उपयोग किया है प्रकाशितवाक्य के अध्याय 1 से।

याद रखें, अध्याय 1 में, जॉन मनुष्य के पुत्र का एक दर्शन देखता है, और उदाहरण के लिए, उसके मुँह से तलवार निकलने का वर्णन किया गया है। जले हुए कांसे जैसे पैरों और आग जैसी आंखों आदि का वर्णन किया गया है। आप उन्हें अध्याय 2 और 3 में पाएंगे। अब, एक बार फिर, लेखक ने पुराने नियम के ग्रंथों से ईसा मसीह की एक समग्र तस्वीर प्रदान की है, लेकिन साथ ही ईसा मसीह का उनका विवरण भी दिया है। अध्याय 1 में मसीह का वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में किया गया है जो अपने दुश्मनों को हराने में सक्षम है लेकिन ऐसा करने में पूरी तरह से न्यायपूर्ण भी है।

तो यह महत्वपूर्ण है। ईसा मसीह को यहां सिर्फ एक विशाल योद्धा के रूप में चित्रित नहीं किया गया है जो आकर अपने दुश्मनों को हराने में सक्षम है। हाँ, यह इसका एक हिस्सा है, यह दिखाने के लिए कि मसीह अपने दुश्मनों को हराने में सक्षम और शक्तिशाली है।

लेकिन साथ ही, लेखक ऐसी भाषा का सहारा लेगा जिससे पता चले कि वह ऐसा कर रहा है। तो सही और न्यायपूर्ण होने की भाषा, हमने इसे अध्याय 18 और 19 में देखा। बाबुल, रोम पर अपनी हार या फैसले में न्यायी, पवित्र और धर्मी होने के रूप में भगवान की प्रशंसा की गई थी।

अतः मसीह अंतिम सर्वव्यापी युद्ध में अपने शत्रुओं को पराजित करने में सक्षम भी है और न्यायसंगत भी। और फिर, यहां हम इतिहास के अंत पर हैं। यहां हम दूसरा आगमन पाते हैं, इतिहास की परिणति जिसकी ओर शेष प्रकाशितवाक्य ने संकेत किया है, जिसके अंश हमने देखे हैं, जिसे देखने के लिए हमारी भूख आखिरकार बढ़ गई है, और अब हम निराश नहीं हैं, हम पूर्ण देखते हैं अंतिम लड़ाई का खुलासा।

हम पहले से ही अन्य निर्णय दृश्यों के रूप में हैं; हम पहले ही इस घटना को प्रत्याशित देख चुके हैं, जो छठी मुहर से शुरू होती है, अध्याय 6 में, प्रभु का दिन और दुश्मनों की हार। हमने अध्याय 17 में यह प्रत्याशित देखा, जहाँ सभी राष्ट्र मेम्रे को हराने के लिए एकत्रित होते हैं, फिर भी मेम्रा उन्हें बिना किसी संघर्ष के हरा देता है। अध्याय 14 में, हम संतों को मेम्रे के साथ खड़े होकर विजयी होते हुए देखते हैं।

इसलिए हमने इस दृश्य को पूरे प्रकाशितवाक्य में कई बार प्रत्याशित देखा है, लेकिन अब अंततः हमें एक पूर्ण चित्र मिल गया है जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं बस उन कई तरीकों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ जिनका वर्णन यीशु ने अपनी क्षमता प्रदर्शित करने के लिए किया है, लेकिन अंतिम युद्ध के दृश्य में अपने न्याय का भी वर्णन किया है। सबसे पहले इस बात पर ध्यान दें कि वफादार और सच्चा उसे कहा जाता है।

यह भाषा, और वह भी जो धार्मिकता से न्याय करती और युद्ध करती है, यह भाषा सीधे पुराने नियम से आती है; कई भजन यीशु को ईश्वर के रूप में इंगित करते हैं या ईश्वर को इंगित करते हैं जो अब, धार्मिकता में है और जो विश्वासयोग्य है, अब युद्ध करता है। संभवतः यशायाह अध्याय 11 का एक विशिष्ट संकेत, एक पुराने नियम का पाठ जो प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, उम्मीद है कि आप इसे समझना शुरू कर देंगे। यशायाह के अध्याय 11 और श्लोक 4 और दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 11, श्लोक 1 से शुरू होता है, यिश्ई के ठूँठ से एक अंकुर निकलेगा, उसकी जड़ से एक शाखा निकलेगी, प्रभु की आत्मा उस पर विश्राम करेगी।

पद 3, और वह यहोवा के भय से प्रसन्न रहेगा, वह अपनी आंखों से जो देखता है उसके अनुसार न्याय न करेगा, और जो अपने कानों से सुनता है उसके अनुसार निर्णय करेगा, और यहां पद 4, यशायाह 11 है, परन्तु वह धर्म से न्याय करेगा, वह दरिद्रों का न्याय धर्म से करेगा, वह पृथ्वी के कंगालों का न्याय धर्म से करेगा, वह पृथ्वी को अपने मुंह के सोंटे से मारेगा, और अपने होठों की सांस से दुष्टों को मार डालेगा। पद 5 में, धार्मिकता उसकी कमरबंद होगी, और सच्चाई उसकी

कमर का पटुका होगी। तो यहां ध्यान दें कि यशायाह अध्याय 11 से मसीहा की आकृति को अब ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो धार्मिकता से न्याय करता है, जो निष्पक्षता से न्याय करता है, विशेष रूप से जरूरतमंदों और गरीबों के लिए न्याय करता है, और दुष्टों का वध करता है।

और इसलिए यहां अध्याय 19 में, विश्वासयोग्यता, धार्मिकता और न्याय की समान भाषा में, भगवान को न्याय लाने, अपने लोगों को न्याय दिलाने और अब अपने दुश्मनों को दंडित करने के लिए आते हुए चित्रित किया गया है। तथ्य यह है कि उसकी आंखें आग की लपटों की तरह हैं, संभवतः निर्णय का एक और उद्देश्य है; हमने अध्याय 2, 18-23 में देखा कि, आग की लपटों जैसी आंखों के साथ आने वाले मसीह, उनकी स्थिति के कारण, उस चर्च को संबोधित करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मुख्य छवि थी, या मुख्य छवि थी। लेकिन यह अध्याय 1 और पद 13 पर वापस जाता है, जहां जॉन कहता है, दीवटों के बीच मनुष्य के पुत्र जैसा कोई था, जो वस्त्र पहने हुए था, पैरों तक फैला हुआ था, और उसकी छाती के चारों ओर एक सुनहरा पटक था।

उसका सिर और बाल ऊन के समान श्वेत, बर्फ के समान श्वेत थे, और उसकी आंखें धधकती आग के समान थीं। तो अब हम मनुष्य के पुत्र का यह चित्र देखते हैं, जो एक शक्तिशाली न्यायाधीश के रूप में आ रहा है, और अब एक योद्धा के रूप में आ रहा है, जो धार्मिकता और न्याय में, अपने लोगों, अपने संतों के लिए निर्णय करेगा, और इस तरह से करेगा कि पृथ्वी के राष्ट्रों पर न्याय लाता है। इस तथ्य पर ध्यान दें कि उनके सिर पर मुकुट रखने का भी वर्णन किया गया है।

हमने अन्यत्र देखा है कि अलग-अलग व्यक्तियों के पास मुकुट थे, विशेष रूप से स्वयं जानवर, जिसके सात सिर थे जिन पर मुकुट थे। और अब यीशु को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जिसके सिर पर मुकुट हैं, इसलिए शायद हमें एक हास्यानुकृति देखने को मिलेगी, उस जानवर के बीच, जिसके पास सात मुकुट थे, और वह बाहर जाता है और जीतता है, वह संतों के साथ युद्ध करता है, वह दिव्य स्थिति का दावा करता है। लेकिन अब यीशु मसीह इसके बिल्कुल विपरीत आते हैं, अपने सिर पर मुकुट के साथ, अपनी शक्ति और सभी राष्ट्रों पर अपनी संप्रभुता का प्रदर्शन करते हैं, और अब वह इसका न्याय करने में सक्षम हैं।

एक दिलचस्प विशेषता यह है कि ईसा मसीह का वर्णन ऐसे नाम से किया गया है जिसे कोई नहीं जानता। और मैं सभी विवरणों, सुझावों में नहीं जाना चाहता कि वह नाम क्या हो सकता है, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि हमने रहस्योद्घाटन की पूरी किताब में, लोगों के माथे पर नाम का नाम पहले ही देख लिया है। ईश्वर। यशायाह अध्याय 62 और श्लोक 2 में हम एक नए नाम पर जोर पाते हैं।

और अब यह नाम मसीह पर लागू होता है, लेकिन यह एक ऐसा नाम है जिसे कोई नहीं जानता। यहां विचार शायद इतना नहीं है कि, यह एक रहस्यमय नाम है जिसे कोई भी संभवतः समझ नहीं सकता है। इसकी पृष्ठभूमि किसी का नाम जानना, उस व्यक्ति पर नियंत्रण रखना या उस व्यक्ति पर अधिकार जमाना होगा।

और विशेष रूप से राक्षसों का नाम लेने में सक्षम होने के संदर्भ में, या किसी राक्षस का नाम रखने का मतलब उस राक्षस, या उस भगवान, या उस जैसी किसी चीज़ पर नियंत्रण रखना होगा। इसलिए, यह कहने से कि ईसा मसीह का एक नाम है जिसे कोई नहीं जानता है, इस तथ्य पर इतना जोर नहीं दिया गया है कि यह रहस्यमय है और ईसा मसीह का एक नाम है जिसे कोई भी कभी नहीं जान पाएगा। नामकरण का विचार, यह न जानना कि उस नाम का क्या अर्थ है, यीशु मसीह कहने का एक और तरीका है; उस पर किसी का अधिकार नहीं है।

यीशु मसीह का पूर्ण नियंत्रण है, वह पूर्णतः संप्रभु है। तथ्य यह है कि कोई भी उसका नाम नहीं बता सकता है, यह पृथ्वी के सभी राष्ट्रों और डैगन और दो जानवरों सहित बुराई की सभी शक्तियों पर उसकी पूर्ण और पूर्ण संप्रभुता का प्रतीक है, जिसे हम देखेंगे कि वह इससे निपटता है। बस एक पल। छवियों के माध्यम से आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए दो अन्य विशेषताएं हैं, एक यह है कि यीशु मसीह को अपने वस्त्र को खून में डूबा हुआ बताया गया है।

अब, यह दिलचस्प है कि यीशु मसीह को युद्ध में शामिल होने से पहले और युद्ध का वर्णन करने से पहले अपने वस्त्र को खून में डुबाने के रूप में वर्णित किया गया है। शायद यह उन अन्य लड़ाइयों का संदर्भ है जिनमें वह शामिल है। एक सुझाव यह है कि यह खून वास्तव में उसका अपना खून है, और यह बहस का हिस्सा है: यीशु के लबादे पर यह किसका खून है? एक सुझाव यह है कि यह यीशु का अपना खून है।

इसलिए, एक बार फिर हम पाते हैं कि जिस विडंबनापूर्ण तरीके से यीशु विजय प्राप्त करते हैं, वह अपनी मृत्यु के माध्यम से विजय प्राप्त करते हैं, वह क्रूस पर बहाए गए अपने स्वयं के रक्त के माध्यम से विजय प्राप्त करते हैं, और इसलिए यहां के रक्त को यीशु के स्वयं के रक्त के रूप में समझा जाना चाहिए जो उन्होंने बहाया था। उनकी मृत्यु। एक बार फिर उस विडंबनापूर्ण तरीके का वर्णन करें जिससे वह विजय प्राप्त करता है। रोम की तरह नहीं, लेकिन अब वह अपनी पीड़ा और मृत्यु पर विजय पा लेगा।

हालाँकि, मुझे लगता है कि युद्ध में उतरने से पहले मसीह के लबादे पर लगे खून को समझने की कुंजी, दिलचस्प बात यह है, और मैं उस पर लौटूंगा, पुराने नियम के संदर्भ पर ध्यान देना है, और वह यहाँ है, यशायाह अध्याय 63 ऐसा प्रतीत होता है यीशु के चित्रण के लिए, पद 1 से 3, पृष्ठभूमि बनें। हम पहले ही देख चुके हैं कि यशायाह के अध्याय 63 ने अंगूर की फसल के लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान की है; अध्याय 14 के अंत में, अंगूर की फसल का दर्शन और परमेश्वर के क्रोध के रस के कुण्ड में रौंदना, ताकि जो निकले वह अंगूर का रस न हो, जो निकले वह शत्रुओं का खून हो। यशायाह 63, 1 से 3 की यह पृष्ठभूमि, मसीह के वस्त्र के इस वर्णन में प्रतिबिंबित होती प्रतीत होती है जो पहले से ही खून में डूबा हुआ है।

मुझे यशायाह का अध्याय 63 फिर से पढ़ने दीजिए, जिसमें प्रतिशोध के दिन, न्याय के दिन की भविष्यवाणी की गई है, जब भगवान अपने दुश्मन को दंडित करने के लिए वापस आएंगे। यह कौन है जो लाल रंग के वस्त्र पहने हुए एदोम वा बोस्रा से आ रहा है? यह कौन है जो वैभव का वस्त्र धारण किये हुए अपनी शक्ति की महानता के साथ आगे बढ़ रहा है? मैं ही धर्म से बोलकर

उद्धार करने में सामर्थी हूँ। तेरे वस्त्र रस के कुण्ड में रौंदते हुए के समान लाल क्यों हैं? मैं ने अकेले ही अंगूर के कुंड में दाख रौंदा है।

अन्यजातियों में से कोई मेरे संग न था; मैं ने उनको अपने क्रोध में रौंद डाला, और अपने क्रोध में ही उन्हें कुचल डाला है। उनके खून के छींटे मेरे वस्त्रों पर लगे, और मैंने अपने सारे वस्त्र उनके खून से रंग लिये। इसलिए, दूसरे शब्दों में, अगर हमें शायद अध्याय 14 में दिए गए फैसले के दृश्य को समझना है, शराब के कुंड में रौंदना और परिणामस्वरूप दुश्मन का खून, तो शायद हमें यीशु के लबादे पर लगे खून को समझना चाहिए, जिसमें उनका लबादा डूबा हुआ था रक्त, यहाँ अध्याय 19 में उसी प्रकार।

यह खून उसका अपना खून नहीं है, हालांकि यह हो सकता है, और आप इसे अच्छी तरह से समझ सकते हैं, लेकिन खून मुख्य रूप से उसके दुश्मनों का खून है, यशायाह 63 की पूर्ति में। उसके दुश्मनों का खून भगवान के खून का परिणाम है परमेश्वर का क्रोध, उसके क्रोध की मदिरा को रौंद रहा है और उसके शत्रुओं पर न्याय ला रहा है। अब ये अजीब लगता है।

इससे पहले कि वह अपने शत्रुओं को हरा दे, आप मसीह के वस्त्र को खून में कैसे डूबा सकते हैं? मैं सुझाव दूंगा कि यह सर्वनाशकारी प्रतीकवाद का सिर्फ एक हिस्सा है, कि हमें यह सुझाव देने में इतना शाब्दिक होने की आवश्यकता नहीं है कि कैसे वह अपने दुश्मनों से लड़ने से पहले उनका खून पीता है। याद रखें, जॉन यहाँ यीशु मसीह का वर्णन कर रहा है। जॉन को हमें एक सटीक, विस्तृत, तार्किक विवरण देने में कोई दिलचस्पी नहीं है, जहाँ, नहीं, आप मसीह को उसके युद्ध से पहले उसके कपड़ों पर खून से सना हुआ नहीं देख सकते।

जॉन को केवल पुराने नियम के पाठ को चित्रित करने, योद्धा का वर्णन करने, युद्ध लाने में उसकी क्षमता और उसके न्याय को प्रदर्शित करने में रुचि है। और इसका एक हिस्सा यह है कि, यह केवल यशायाह 63 की ओर उनके संकेत के कारण है। जॉन अब यशायाह 63 की पूर्ति में यीशु को योद्धा के रूप में वर्णित कर रहे हैं।

ऐसा करने के लिए, वह खून में डूबे एक कपड़े की छवि बनाता है, इससे पहले भी उसने अपने दुश्मनों को हराया था। लेकिन पहले से ही, वह मसीह के स्वभाव के बारे में कुछ कह रहा है, क्योंकि यशायाह 63 की पूर्ति में वह आने वाला है और भगवान के दुश्मनों को मार डालेगा और उनका न्याय करेगा। ध्यान आकर्षित करने वाली दूसरी दिलचस्प विशेषता यह है कि मुझे लगता है कि इसकी पृष्ठभूमि को समझने के लिए यह महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण है, और वह तथ्य यह है कि ईसा मसीह को उनके मुंह से तलवार निकलने के रूप में वर्णित किया गया है।

हमने देखा कि यह प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 में यीशु के वर्णन का हिस्सा है, और इसे एक चर्च के संबंध में अध्याय 2 और 3 में भी उठाया गया है। लेकिन उसके मुंह से निकलने वाली तलवार की छवि स्पष्ट रूप से पुराने नियम के पाठ पर निर्भर करती है, लेकिन मुझे लगता है कि यह मुख्य रूप से एक निर्णय दृश्य के रूप में चित्रित किया गया है। हम उसे बस एक क्षण में उठा लेंगे।

लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यशायाह अध्याय 49 और पद 2 उन ग्रंथों में से एक है जिस पर जॉन आधारित है। यशायाह अध्याय 49 और पद 2. उस ने मेरे मुँह को तेज तलवार के समान बना दिया। अपने हाथ के साथे में उसने मुझे छुपा लिया।

उस ने मुझे चमकाए हुए तीर के समान बनाया, और अपने तरकश में छिपा रखा। लेकिन उस पहले भाग में, उसने मेरे मुँह को एक तेज़ तलवार की तरह बना दिया। और उस पाठ में जो हमने अभी पढ़ा, यशायाह अध्याय 11 और पद 4। परन्तु वह धर्म से दरिद्रों का न्याय करेगा।

वह न्याय के साथ गरीबों के लिए फैसले लेंगे. वह अपने मुँह की छड़ी से पृथ्वी पर प्रहार करेगा। वह अपने होठों की सांस से दुष्टों को मार डालेगा।

और इसलिए अब यीशु को उसके मुँह से तलवार निकलते हुए उस व्यक्ति की छवि के रूप में चित्रित किया गया है जो न्याय करने के लिए आता है। जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, मसीह का शाब्दिक चित्र प्रस्तुत करने या उसका निर्माण करने का प्रयास करना हास्यास्पद होगा। मुझे यकीन नहीं है कि यह वही यीशु है जिसे मैं उसके मुँह से तलवार निकलते हुए देखना चाहता हूँ।

हम इसे कैसे समझें? इससे पहले अध्याय 5 में, क्या वह मारा गया मेमना नहीं है? और उसके पास सात आत्माएं और सात आंखें हैं, जो सात आत्माएं हैं। तो तुम्हारे पास एक मारा हुआ मेमना है; अब वह सात मुकुट पहन रहा है। और उसके मुँह से तलवार निकल रही है।

क्या यीशु विभिन्न रूपों में रूपांतरित होने में सक्षम है? या हम इसे कैसे समझें? नहीं, जॉन यीशु मसीह के व्यक्तित्व के बारे में कुछ कहने के लिए मुख्य रूप से पुराने नियम के साथ-साथ अन्य सर्वनाशकारी साहित्य से प्रतीकवाद का उपयोग कर रहा है। वह कौन है और क्या करता है। और इसलिए यहाँ, जॉन, पुराने नियम से भाषा उधार लेते हुए, मसीह की एक तस्वीर चित्रित कर रहा है जो न्याय और धार्मिकता के साथ निष्पादित करने के लिए आता है।

पृथ्वी पर और उसका विरोध करने वाले लोगों तथा विद्रोही दुष्ट मानवता पर परमेश्वर का न्याय लागू करने के लिए आता है। तो अब, तलवार न्याय की एक छवि है। दिलचस्प बात यह है कि उसके मुँह से निकली तलवार भी लेखक को अगले पाठ तक ले गई होगी।

और वह भजन अध्याय 2 है। जब लेखक श्लोक 15 में कहता है, उसके मुँह से राष्ट्रों को मारने के लिए एक तेज़ तलवार निकलती है। वह लोहे के राजदण्ड से उन पर शासन करेगा। भजन अध्याय 2 और श्लोक 8 का स्पष्ट संकेत। तो अब मसीह, जॉन ने मसीह का वर्णन किया है, पुराने नियम की भाषा का उपयोग करते हुए यीशु मसीह का वर्णन किया है जो उसे एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में चित्रित करता है जो न्याय को निष्पादित करने के लिए आ रहा है, भगवान का न्याय, युद्ध के रूप में निष्पादित करने के लिए आ रहा है, परमेश्वर के शत्रुओं का न्याय करके पृथ्वी पर न्याय करो।

और ये सभी पुराने नियम के ग्रंथ इसी प्रकार के संदर्भों से लिए गए हैं। अब, संचयी रूप से ईसा मसीह को एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में वर्णित किया जा रहा है। ध्यान आकर्षित करने वाली एक अन्य विशेषता काफी दिलचस्प है।

दो अन्य विशेषताएँ. दिलचस्प बात यह है कि पद 13 में उसका नाम परमेश्वर का वचन है। जॉन के सुसमाचार के अलावा, यह एकमात्र अन्य स्थान है जहाँ आप यीशु को शब्द के रूप में संदर्भित पाते हैं।

यूहन्ना अध्याय 1, आरंभ में, वचन था। वचन परमेश्वर के पास था। शब्द भगवान था।

अब, आप पाते हैं कि परमेश्वर का वचन फिर से प्रकट हो रहा है। या शब्द, लोगो, अब यीशु मसीह का संदर्भ दे रहा है। जॉन के बाहर यह एकमात्र स्थान है जहाँ ऐसा होता है।

दूसरी दिलचस्प विशेषता यह है कि बाद में पाठ में, सफेद घोड़े पर सवार का वर्णन इस प्रकार किया गया है, मैं सटीक श्लोक का पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ, जहाँ उसका वर्णन किया गया है कि उसकी सेना उसके पीछे चल रही है। यीशु मसीह एक सफेद घोड़े पर सवार होकर आते हैं, और उनकी सेना, स्वर्ग की सेना, उनके पीछे चलती है। अब, दिलचस्प बात यह है कि इस बारे में दो बातें बतानी हैं।

सबसे पहले, इस पर ध्यान दें, और हम इसे बाद में उठाएंगे, ध्यान दें कि सेना स्पष्ट रूप से कुछ नहीं करती है। ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि सेना वास्तव में किसी भी लड़ाई या लड़ाई में शामिल है। सेना को ईसा मसीह का अनुसरण करने वाली सेना के रूप में वर्णित किया गया है, लेकिन यह वास्तव में कुछ नहीं करती है।

पद 14 वह पद था जिसकी मैं तलाश कर रहा था, स्वर्ग की सेनाएँ उसका पीछा कर रही थीं। लेकिन ध्यान दें, सेनाओं ने, ग्रांट ओसबोर्न ने अपनी टिप्पणी में जो कहा है, उसके बावजूद कि जाहिर तौर पर दुश्मनों की हार में सेनाओं की भूमिका होती है, पाठ स्पष्ट नहीं है। वास्तव में, पाठ लगभग विपरीत कहता है।

यह स्वयं मसीह है जो शत्रुओं को पराजित करता है। और इसके अलावा, श्लोक 11 से 16 में जिस तरह से उसका वर्णन किया गया है, उसके बाद दुश्मनों को हराने के लिए सेना की आवश्यकता किसे है? लेकिन यह दिलचस्प है कि उसका वर्णन किया गया है, शायद युद्ध के दृश्य और युद्ध की कल्पना को जोड़ते हुए, उसे स्वर्ग की सेनाओं के रूप में वर्णित किया गया है जो उसका पीछा कर रही हैं, हालांकि वे कुछ नहीं करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे युद्ध में कोई भूमिका नहीं निभा रहे हैं।

इन सेनाओं के बारे में कहने वाली दूसरी बात यह है कि इस बात पर बहस चल रही है कि क्या इस सेना को ईश्वर के लोगों, स्वयं संतों के रूप में समझा जाना चाहिए, या क्या वे देवदूत प्राणी हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यद्यपि कुछ टिप्पणियाँ कहती हैं कि यह दोनों है, यह दोनों का संयोजन है; तथ्य यह है कि श्लोक 14 में देखा गया है कि उन्हें बढ़िया लिनन, सफेद और शुद्ध कपड़े पहने हुए बताया गया है, इससे मुझे पता चलता है कि यह स्वयं संतों का एक दर्शन है। और यह पुष्टि के दृश्य को और बढ़ा देगा।

जब मसीह उनके खून का बदला लेता है, तब संत स्वयं उसके साथ होते हैं, जब वह अब उनके शत्रुओं का न्याय करके उन्हें सही ठहराता है। लेकिन, जैसा कि हमने कहा, वे वास्तव में कुछ भी नहीं करते हैं। योद्धा युद्ध करने के लिए सर्वथा पर्याप्त है।

तो, अब, श्लोक 17 के अंत और श्लोक 16 के अंत में, हम युद्ध के विवरण के लिए तैयार हैं। अब हमारे पास योद्धा का वर्णन है; हमें योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पृथ्वी पर भगवान के फैसले को क्रियान्वित करने में, अपने दुश्मनों के हाथों पीड़ित संतों को सही ठहराने में सक्षम और न्यायपूर्ण दोनों है; अब ईश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जो पुराने नियम की पूर्ति में इसे पूरा करने में पूरी तरह से सक्षम, साथ ही धर्मी और न्यायप्रिय है। अब, अध्याय के अंत तक श्लोक 17 में, हमें युद्ध का वर्णन मिलता है।

और फिर, मैं बस लड़ाई के संबंध में कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। सबसे पहले, यहजेकेल की पुस्तक, जैसा कि हमने देखा है, ने प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस हद तक कि, जिस तरह से जॉन यशायाह का उपयोग करता प्रतीत होता है, उसके विपरीत, वह इसे अधिक विषयगत रूप से उपयोग करता है, जहां वह यशायाह में विभिन्न स्थानों से, प्रकाशितवाक्य में विभिन्न स्थानों से पाठ इकट्ठा करेगा, ताकि जॉन ने जो देखा और जॉन जो प्रयास कर रहा है उसका विषयगत समर्थन किया जा सके। वर्णन करना।

इसके विपरीत, ईजेकील ने इस हद तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है कि जॉन काफी हद तक ईजेकील के पाठ के क्रम में ही इसका अनुसरण करता है। इसलिए, हमने अध्याय 4 और 5 में देखा कि जॉन ने सिंहासन कक्ष के विवरण के लिए यहजेकेल 1 और 2 का चित्रण किया है। प्रकाशितवाक्य 7 में, जॉन ने सुरक्षा के लिए 144,000 की सीलिंग की कल्पना के लिए ईजेकील 9 का सहारा लिया है।

हमने देखा है कि अध्याय 17 और 18 में, जॉन ने बेबीलोन के पतन, या सोर के पतन, आर्थिक दृष्टि से सोर के फैसले का वर्णन करने के लिए यहजेकेल 27 का सहारा लिया है। अब, जॉन यहजेकेल 38 और 39 का उपयोग करेगा, जिसमें एक युद्ध दृश्य, अंत समय की लड़ाई का भी वर्णन किया गया है। ईजेकील में अध्याय 37 के बाद, जहां हम सूखी हड्डियों को ऊपर उठाने, और उनमें मांस डालने और उन्हें जीवन देने के संदर्भ में इज़राइल की बहाली के बारे में पढ़ते हैं, उस कल्पना का अनुसरण करते हुए, अध्याय 38 और 39 में, हम इसकी भाषा पाते हैं एक अंत समय की लड़ाई.

तो, यहजेकेल 39 प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 और श्लोक 17 से 21 के पीछे प्राथमिक मॉडल है। उदाहरण के लिए, जब आप यहजेकेल 39 पढ़ते हैं, तो मैं यहां और वहां कुछ मुट्ठी भर छंद पढ़ना चाहता हूँ जो स्पष्ट रूप से संबंध को दर्शाते हैं। अध्याय 39, और श्लोक 4 से आरंभ करते हुए, तू और तेरी सारी सेना, और तेरे संग की सारी जातियां इस्राएल के पर्वत पर गिर जाएंगी।

मैं तुझे सब प्रकार के मांस और पक्षियों, और बनैले पशुओं का आहार कर दूंगा। और फिर श्लोक 17 पर आते हैं। मनुष्य के पुत्र, वास्तव में, यह यहजेकेल को संबोधित करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शीर्षक है।

हे मनुष्य के सन्तान, यहजेकेल, प्रभु यहोवा यही कहता है। हर प्रकार के पक्षियों और सभी जंगली जानवरों को बुलाओ, इकट्ठा हो जाओ, और यहाँ वह जगह है जहाँ उसे पुकारना है। जिस यज्ञ की मैं तुम्हारे लिये तैयारी कर रहा हूँ उस यज्ञ के चारों ओर से इकट्ठे होकर इकट्ठे हो जाओ।

इस्राएल के पर्वत पर महान बलिदान. वहाँ तुम मांस खाओगे और लोह पीओगे; तू शूरवीरों का मांस खाएगा, और पृथ्वी के सब हाकिमों का लोह पीएगा, मानो वे मेढ़े, भेड़ के बच्चे, बकरियाँ, और बैल हों, वे सब बाशान के पाले हुए पशु हों। मैं तुम्हारे लिये जो बलिदान तैयार कर रहा हूँ उसमें तुम चर्बी तब तक खाओगे जब तक तुम्हारा पेट न भर जाए, और लोह तब तक पीते रहोगे जब तक तुम मतवाले न हो जाओ।

मेरी मेज पर तुम घोड़ों, सवारों, शूरवीरों, सिपाहियों और हर प्रकार के तृप्त भोजन करोगे, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। उम्मीद है, आपने यहां अध्याय 19, छंद 17 में चित्रण उठाया है। वास्तव में, यह 17 से 18 तक है, जो वास्तव में केवल युद्ध की तैयारी है।

यानी, होने वाले हमले और नरसंहार और युद्ध की तैयारी में, अब 17 और 18 में, एक देवदूत, यहजेकेल के अध्याय 39 में ऐसा करने के विपरीत, अब एक देवदूत पक्षियों को आने और एक दावत की तैयारी करने के लिए बुलाता है जो अब अंत समय की लड़ाई के परिणामस्वरूप उत्पन्न होगा। अध्याय 19 की शुरुआत में रात्रि भोज या मेमने के भोज के विपरीत, किसी दावत या महान भोज की इस भाषा को पढ़ना मुश्किल नहीं है। अब हमें एक और दावत या रात्रि भोज मिलता है, लेकिन अब जिन मेहमानों को आमंत्रित किया गया है। राष्ट्र नहीं; वे ही भोज हैं, और पक्षी निमंत्रित हैं।

लेकिन जॉन स्पष्ट रूप से इस कल्पना के लिए ईजेकील को आकर्षित कर रहा है, और दावत के लिए इकट्ठा होने वाले सारथी या पक्षियों की भाषा युद्ध के परिणामस्वरूप होने वाले नरसंहार और विनाश के प्रतीक की छवि का हिस्सा है। लेकिन श्लोक 17 और 18 केवल तैयारी हैं, और श्लोक 19 और 21 युद्ध का वर्णन करेंगे। लेकिन लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि वह अंत समय की लड़ाई की इस कल्पना के लिए ईजेकील 39 का उपयोग कर रहा है।

उल्लेख करने योग्य दूसरी बात जो इसमें से अधिकांश के लिए सच है, वह यह है कि उम्मीद है, आप यह देखना शुरू कर देंगे कि जॉन यहां प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग कर रहा है। इसलिए हमें सचमुच ऐसे समय के बारे में नहीं सोचना चाहिए जब सचमुच ऐसे पक्षी होंगे जो पृथ्वी पर कहीं न कहीं योद्धाओं और सैनिकों की लाशों को खाने के लिए आएंगे जिन्हें मौत के घाट उतार दिया गया है। लेकिन जॉन यहजेकेल 38 और 39 में एक अन्य सर्वनाशकारी प्रकार की पुस्तक से भाषा की कल्पना और प्रतीकवाद का उपयोग विशेष रूप से यहां केवल उस अंतिम निर्णय की अंतिमता, सीमा और पूर्ण विनाश को दर्शाने के लिए कर रहा है, जिसे मसीह, सफेद घोड़े पर सवार, करेगा। लोगों पर लाओ.

तो यह पहली बात है. ईजेकील अध्याय 39 और 38 प्राथमिक मॉडल के रूप में कार्य करते हैं, प्राथमिक पाठ जिसे जॉन अंत समय की लड़ाई के बारे में अपने दृष्टिकोण का निर्माण करने के

लिए तैयार करता है। दूसरी बात जो हम पहले ही बता चुके हैं वह यह है कि ध्यान दें कि कोई लड़ाई न हो।

आपको नहीं करना है; यह कोई सामान्य लड़ाई नहीं है। यह बहुत ही असामान्य लड़ाई है। अधिकांश लड़ाइयों में, आपके पास सेनाएँ होती हैं, और दोनों पक्षों में हताहत होते हैं, और तब तक झड़प और संघर्ष होता है जब तक कि एक पक्ष विजयी नहीं हो जाता।

यहाँ ऐसा बिल्कुल नहीं होता है। कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं है। इसके बजाय मेम्मा बस नीचे आता है और अपने मुँह से निकलने वाली तलवार से अपने दुश्मनों को मार डालता है।

यहेजकेल अध्याय 38 में, वास्तव में, शत्रु आग से नष्ट हो जाते हैं। हम देखेंगे कि इसे बाद में अध्याय 20 में उठाया जाएगा। लेकिन अब, अपने युद्ध दृश्य में, जॉन दुश्मनों की हार का वर्णन करता है, न कि उन सेनाओं की जो मसीह का अनुसरण करती हैं।

ऐसी कोई लड़ाई नहीं है जो दोनों पक्षों के हताहतों के साथ होती हो। बस, मेम्मा आता है, और अपने मुँह से निकलने वाली तलवार से शत्रुओं को हरा देता है। मुझे लगता है कि यह आश्चर्य करने के प्रयासों का जवाब देने में सहायक है कि क्या यह या वह युद्ध या युद्ध का खतरा आर्मागिडन हो सकता है या अंतिम युद्ध हो सकता है।

मैं लोगों को बताना चाहता हूँ कि यदि युद्ध शुरू होता है, और हताहत होते हैं और लड़ाई होती है, तो आप काफी हद तक आश्वस्त हो सकते हैं कि यह अंत समय की लड़ाई नहीं है क्योंकि अंत समय की लड़ाई में कोई लड़ाई नहीं होती है। मसीह बस आते हैं और अपने मुँह से निकली तलवार से अपने शत्रुओं को मार डालते हैं। इसलिए जब हम युद्ध देखते हैं या जब हम वास्तविक लड़ाइयाँ होते देखते हैं या लड़ाइयों की धमकियाँ देखते हैं, तो मुझे लगता है कि हम पूरी तरह आश्वस्त हो सकते हैं कि यह आखिरी लड़ाई नहीं है क्योंकि आखिरी लड़ाई किसी भी लड़ाई की तरह नहीं है जिसे इतिहास ने कभी नहीं देखा है क्योंकि वहाँ कोई लड़ाई नहीं हुई है दो पक्ष या दो सेनाएँ।

मेम्मा बस लौटता है और अपने मुँह से निकलने वाली तलवार से अपने दुश्मनों को मार डालता है या उनका न्याय करता है। इस अंतिम समय के युद्ध दृश्य के बारे में मैं जो तीसरा अवलोकन करना चाहता हूँ, वह मेरे विचार में प्रयुक्त पुराने नियम के पाठ और विशेष रूप से तलवार की कल्पना के प्रकाश में है। जिस प्रकार मसीह अपने शत्रुओं को पराजित करता है वह उसके मुँह से निकलने वाली तलवार से होता है। मेरी राय में, तब, और मेरे निर्णय में, यह अंत समय की लड़ाई किसी भी शाब्दिक लड़ाई का जिक्र नहीं कर रही है, चाहे स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर या किसी भी प्रकार की आध्यात्मिक लड़ाई हो।

यह बिल्कुल भी शाब्दिक लड़ाई का जिक्र नहीं कर रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि लेखक यीशु मसीह के अंतिम फैसले का प्रतीक और चित्रण करने के लिए युद्ध की कल्पना का उपयोग कर रहा है, जिसे वह केवल अपने मुँह से बोलता है। इसलिए इसे प्राथमिक रूप से शाब्दिक रूप से एक लड़ाई के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि लेखक भगवान के दुश्मनों के संपूर्ण फैसले और अंतिम फैसले का वर्णन करने के लिए युद्ध की भाषा का उपयोग कर रहा है जो यीशु लाता

है, जिसे यीशु केवल शब्द बोलकर निष्पादित करते हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि हमारे पास यहां जो कुछ है वह मुख्य रूप से मसीह द्वारा दुनिया में अपने लोगों पर न्याय के शब्द बोलने का एक न्याय दृश्य है, और अब इसे एक महान युद्ध की भाषा द्वारा चित्रित और प्रतीक किया गया है।

इसलिए मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम समझें कि युद्ध की कल्पना का उपयोग किसी बहुत विशिष्ट चीज़ के प्रतीक के रूप में और किसी बहुत विशिष्ट चीज़ के बारे में बात करने के लिए किया जा रहा है, और यह एक निर्णय है, न कि शाब्दिक अंत-समय का विस्फोट या संघर्ष या लड़ाई, बल्कि यह बस एक न्याय है जो तब घटित होता है जब मसीह न्याय का वचन बोलता है।

चौथा, ध्यान दें कि सबसे पहले, अध्याय 19 में भगवान जिन पहले शत्रुओं का निपटारा करते हैं या उनका न्याय करते हैं, वे जानवर और झूठे भविष्यवक्ता हैं, जो ऐसे प्रतीत होते हैं जिन्होंने योद्धाओं को एक साथ इकट्ठा किया है और अब अंतिम युद्ध शुरू करने के लिए तैयार हैं। अब, श्लोक 20 में सबसे पहले जानवर को पकड़ लिया गया है और फिर अध्याय 13 से झूठा भविष्यवक्ता और इससे यह भी पता चलता है कि जानवर और अध्याय 13 से झूठा भविष्यवक्ता, हालांकि वहां उनकी पहचान रोम और शायद रोमन प्रांतों से की गई है। सम्राट पूजा को लागू करने और रोमन साम्राज्य के जानवर और रोम और शायद सम्राट के प्रतीक जानवर नंबर एक की ओर ध्यान आकर्षित करने के इच्छुक हैं।

यह दिलचस्प है कि अब वे वास्तव में अंतिम समय के फैसले में उपस्थित हैं, एक बार फिर सुझाव देते हैं कि जानवरों की आकृतियाँ सिर्फ रोम से कहीं अधिक हैं। वे वही जानवर हैं जिन्होंने अतीत में इज़राइल के इतिहास में अन्य राष्ट्रों, अन्य ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक, दमनकारी राष्ट्रों में निवास किया था और उन्हें ऊर्जावान और प्रेरित किया था। अब, एक बार फिर, वे रोमन सरकार और रोमन साम्राज्य के रूप में सामने आए हैं, और अब उन्हें अंतिम न्याय के अधीन होने के रूप में चित्रित किया गया है जो अब यीशु मसीह के दूसरे आगमन के परिणामस्वरूप आता है।

तो सबसे पहले, जानवर और झूठे भविष्यवक्ता, प्रकाशितवाक्य 13 में दो जानवरों के अन्य नाम, आग की झील में फेंक दिए जाते हैं। जब हम प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 पर पहुंचेंगे तो हम आग की झील के बारे में अधिक बात करेंगे जहां यह फिर से उभर कर सामने आती है। लेकिन इस बिंदु पर दो टिप्पणियों पर बहस होती है।

ध्यान दें कि आपने सोचा होगा कि ड्रैगन के बारे में क्या। आपके पास दो जानवरों को हटाया जा रहा है, लेकिन ड्रैगन के बारे में क्या? खैर, हमें अगले अध्याय तक ड्रैगन की प्रतीक्षा करनी होगी। कुछ छंदों के बाद, अध्याय 20 में, ड्रैगन को पदच्युत कर दिया जाएगा। दिलचस्प बात यह है कि जॉन जो कर रहा है वह लगभग वस्तुतः दो जानवरों और ड्रैगन को उसी विपरीत तरीके से हटा रहा है जिस तरह से उन्हें पेश किया गया था या विपरीत क्रम में। अध्याय 12 में, ड्रैगन का परिचय दिया गया है, और फिर अध्याय 13 में, दो जानवरों का।

अब, उनके निष्कासन में, पहले अध्याय 19 में दो जानवरों को हटा दिया गया है, और फिर ड्रैगन को हटा दिया जाएगा और अध्याय 20 में उसका न्याय किया जाएगा। इसलिए आपको ड्रैगन यहां

दिखाई नहीं दे रहा है क्योंकि जॉन उत्तरोत्तर बुराई देखने जा रहा है निकाला गया। इसकी शुरुआत अध्याय 17 और 18 में बेबीलोन को हटाकर उसका न्याय करने से होती है और फिर इसकी शुरुआत शेष विश्व के न्याय से होती है।

इसमें सबसे पहले सभी जानवरों, दो जानवरों को हटाना शामिल है, और फिर अंत में, न्याय के रूप में बुराई को हटाने के एक प्रगतिशील दृश्य में अध्याय 20 में शैतान स्वयं हटा दिया जाएगा। दूसरा, यह भी है कि यहां जो कुछ भी हो रहा है, वह बस, जैसा कि मैंने पहले कहा है, मैं ईश्वर द्वारा सभी बुराइयों को दूर करने और सभी बुराईयों पर ईश्वर के फैसले का प्रतीक मानता हूं। तो हमें प्रगति भी नहीं करनी चाहिए; मुझे नहीं लगता कि हमें कालक्रम को इस तरह दबाना चाहिए जैसे कि वस्तुतः पहले जानवर और झूठे भविष्यवक्ता का न्याय किया जाएगा और फिर कुछ समय बाद ड्रैगन या कुछ समय बाद राष्ट्रों का।

लेकिन एक बार फिर, लेखक छवियों की एक श्रृंखला के माध्यम से यह प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहा है कि हम इतिहास के अंत में क्या घटित होते हुए पाते हैं, और वह है संपूर्ण न्याय और जो कुछ भी बुरा है उसका पूर्ण निष्कासन। लेकिन अब, जैसा कि मैंने कहा है, उनका अनुमान है कि शाब्दिक लड़ाई या शाब्दिक नरसंहार के माध्यम से नहीं, बल्कि निर्णय की भाषा का उपयोग किया जाता है, युद्ध की भाषा का उपयोग भगवान के न्याय की तीव्र और निर्णायक प्रकृति को प्रदर्शित करने और यहां शक्तियों को हराने के लिए किया जाता है, पशु आकृतियाँ, पहला और दूसरा जानवर, जानवर और झूठा भविष्यवक्ता जिसने प्रेरित किया और जो वास्तव में परमेश्वर के लोगों को नष्ट करने और हराने के लिए रोमन साम्राज्य की दमनकारी गतिविधियों और जानलेवा प्रयासों के पीछे था। तो स्वाभाविक रूप से, वे पहले न्याय में जाते हैं, और फिर श्लोक 20 में उनका अनुसरण करते हुए, उनमें से बाकी को लेखक के मुंह से निकली तलवार से मार दिया जाता है, जो फिर से निर्णय का प्रतीक है कि मसीह केवल न्याय और सब कुछ का शब्द बोलता है उसके शत्रु जिन्होंने परमेश्वर और उसके लोगों का विरोध किया है वे अंततः हार गए हैं।

तो यहाँ जो चल रहा है, वह है, जैसा कि मैंने कहा, निर्णय दृश्यों के रूप में बुराई का प्रगतिशील निष्कासन है जो अध्याय 21 में नई रचना के उद्भव के लिए रास्ता तैयार करेगा। जब आप अध्याय 20 के अंत तक पहुँचते हैं, सारी बुराई हटा दी गई है, सारी बुराई का न्याय कर दिया गया है, दमनकारी, ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक, दुष्ट साम्राज्य और पृथ्वी जिस पर उसने शासन किया था, में कुछ भी नहीं बचा है, न्याय के दृश्यों में सब कुछ हटा दिया गया है ताकि अब केवल एक ही चीज़ बचे जो कुछ बचा है वह ईश्वर के एक नए रचनात्मक कार्य के लिए है जो अपने उन लोगों के लिए विरासत और पुरस्कार लाएगा जो वफादार हैं और जो जानवरों और उसकी मांगों के आगे झुकने से इनकार करते हैं। आखिरी बात जो मैं अध्याय 19:11-21 के बारे में कहना चाहता हूँ, विशेष रूप से 17-21 जो उस युद्ध का वर्णन करता है जिसके बारे में हमने कहा कि यह वास्तव में बिल्कुल भी युद्ध नहीं है जिस तरह से इसका वर्णन किया गया है और साथ ही यह जिस तरह से इसका प्रतीक है, इसका मतलब एक प्रतीक है अंतिम निर्णय और शाब्दिक लड़ाई नहीं, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे हमने अध्याय 16 में उठाया था और यह अध्याय 16 में शुरू हो रहा है और मैं अध्याय 17 भी जोड़ूंगा, अध्याय 17 के अंत में हमने देखा कि पृथ्वी के राजाओं ने जानवर के साथ मिलीभगत की थी, उन्होंने मेरे के साथ युद्ध करने के लिए जानवर के साथ गठबंधन किया।

इसलिए मैं उस पाठ को भी शामिल करना चाहता हूँ, लेकिन अध्याय 16 से श्लोक 14 में शुरू करें यदि आपको छठे कटोरे के फैसले के हिस्से के रूप में याद है कि अजगर, जानवर और झूठे भविष्यवक्ता के मुँह से, अपवित्र त्रिमूर्ति तीन आई मेंढक और वे एक पलायन प्लेग को प्रतिबिंबित करने में सक्षम थे, वे राष्ट्रों को एक लड़ाई के लिए इकट्ठा होने के लिए धोखा देने में सक्षम थे, जिसे तब लेखक ने श्लोक 16 में आर्मागिडन की लड़ाई के रूप में वर्णित किया है, जो संभवतः लड़ाई के एक प्रसिद्ध स्थान की पुराने नियम की अवधारणा को उधार ले रहा है। अंतिम युद्ध के दृश्य के रूप में सर्वनाशकारी अनुपात में उड़ा दिया गया। लेकिन हमने देखा कि श्लोक 16 में किसी युद्ध का वर्णन नहीं किया गया था; इसमें केवल युद्ध के लिए उनके एकत्र होने का उल्लेख था; आपने किसी युद्ध का वर्णन नहीं देखा. फिर अध्याय 17 में, अध्याय 17 के अंत में, हमें उस युद्ध का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है, श्लोक 12 से शुरू करते हुए: जो दस सींग आपने देखे वे दस राजा हैं जिन्होंने अभी तक एक राज्य प्राप्त नहीं किया है, लेकिन एक के लिए उस समय, वे पशु के साथ-साथ राजाओं के समान अधिकार प्राप्त करेंगे।

उनका एक ही उद्देश्य है और वे अपनी शक्ति और अधिकार जानवर को दे देंगे, वे मेमे के विरुद्ध युद्ध करेंगे। इसलिए पशु और पृथ्वी के ये राजा, ये दस सींगों के प्रतीक राजा, मेमे के साथ युद्ध करेंगे, परन्तु मेमा उन पर विजय प्राप्त करेगा क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है। यह नाम के समान है; वास्तव में, अध्याय 19 के श्लोक 16 में यीशु के वस्त्र पर सटीक नाम पाया गया है; वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।

तो हमारे पास अब तक दो लड़ाइयाँ हैं, अध्याय 16, आर्मागिडन की लड़ाई, जहाँ राष्ट्र एकत्रित होते हैं, और राजा ड्रैगन से आने वाले मेंढकों और दो जानवरों द्वारा युद्ध के लिए इकट्ठे होते हैं। फिर अध्याय 17 में जानवर और उसके दस राज्यों और मेमने के बीच लड़ाई होती है जहाँ वे हार जाते हैं। अब, अध्याय 19 में, हमें श्लोक 11 और 17-21 में एक और युद्ध से परिचित कराया गया है।

एक और लड़ाई जहाँ घोड़े पर बैठा व्यक्ति जो स्वयं यीशु मसीह है, परमेश्वर का वचन, युद्ध करने के लिए आता है और उन दुश्मनों को आसानी से हरा देता है जो उनके खिलाफ इकट्ठे हुए हैं। श्लोक 19 पर ध्यान दें। फिर मैंने उस पशु और पृथ्वी के राजाओं को देखा, संभवतः अध्याय 17 के राजा, वे दस राजा और उनकी सेनाएँ सवार के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्रित हुई थीं। तो दस राजा सभी राज्यों का प्रतीक हैं, राजाओं की पूरी संख्या।

तो अब आपके पास दुनिया के अंत की यह तस्वीर है जिसमें सारी पृथ्वी युद्ध करने के लिए एकत्र हुई है। और फिर अध्याय 20 श्लोक 8, अध्याय 20 और श्लोक 8, श्लोक 7 से शुरू करते हुए, वास्तव में, जब हजार वर्ष पूरे हो जाएंगे, शैतान रिहा हो जाएगा, और वह बाहर जाएगा और पृथ्वी के चारों कोनों में राष्ट्रों को धोखा देगा, गोग और मागोग को युद्ध के लिये इकट्ठा करने को कहा। और फिर क्या होता है कि वे पवित्र लोगों के नगर तक जाते हैं, और आग स्वर्ग से आती है और उन्हें भस्म कर देती है।

और क्या चल रहा? कितनी लड़ाइयाँ हैं? क्या ये चार अलग-अलग लड़ाइयाँ हैं? क्या अंत समय तक चलने वाली लड़ाइयों की कोई श्रृंखला है? क्या दो लड़ाइयाँ हैं? क्या तीन लड़ाइयाँ हैं? क्या इनमें से कुछ ओवरलैप होते हैं? क्या कोई लड़ाई है? मेरी राय में, मुझे लगता है कि हमें इन सभी

लड़ाइयों को एक ही घटना के संदर्भ में समझना चाहिए। उन सभी का विषय शैतान या जानवर का है जो युद्ध करने के लिए राष्ट्रों को धोखा दे रहा है और इकट्ठा कर रहा है। और फिर वे बिना किसी युद्ध में शामिल हुए ही हार जाते हैं।

इसलिए मुझे लगता है कि अध्याय 16, हर-मगिदोन की लड़ाई, जहां जानवर उन्हें एक साथ इकट्ठा करता है, फिर आगे अध्याय 17 में दर्शाया गया है, जहां जानवर और दस राजा मेमे के खिलाफ युद्ध छेड़ते हैं, लेकिन मेम्रा, जो राजाओं का राजा और भगवान है प्रभुओं की शक्ति उन्हें हरा देती है। अब हम तीसरी बार फिर से वर्णित युद्ध को देखते हैं। वही लड़ाई, लेकिन एक संपूर्ण कथा।

अध्याय 19 में, अब राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु बाहर जाता है जहाँ जानवर और दस राजाओं ने एक बार फिर सेना इकट्ठी की है। एक सेना इकट्ठा करने के विषय पर ध्यान दें और जानवर या शैतान उसमें शामिल हैं, और वे बस मेमे द्वारा मारे गए हैं। ध्यान दें कि इन सभी में कोई युद्ध नहीं हो रहा है।

और फिर अंत में, मैं आपको सुझाव दूंगा कि अध्याय 20 वही लड़ाई है। यह वही अंत समय की लड़ाई है। फिर से ध्यान दें कि शैतान राष्ट्रों को धोखा देता है जैसा कि उसने अध्याय 16, आर्मागिडन की लड़ाई में किया था।

शैतान राष्ट्रों को युद्ध के लिए इकट्ठा करने के लिए धोखा देता है। युद्ध के लिए उन्हें इकट्ठा करने, युद्ध के लिए तैयार होने के विषय पर ध्यान दें, और वे बस हार जाते हैं। और वैसे, दूसरी बात जो अध्याय 20 की लड़ाई को अध्याय 19 की लड़ाई से जोड़ती है, वह यह तथ्य है कि दोनों के पीछे एक ही पुराना नियम का पाठ निहित है।

ईजेकील 38 और 39। इसलिए मैं यह मानता हूं कि ये सभी बिल्कुल उसी अंत समय की लड़ाई को संदर्भित करते हैं, उन्हें अलग-अलग दृष्टिकोण से देखते हैं। अब हमें यह पूछना होगा कि लेखक प्रकाशितवाक्य 20 में चौथी बार युद्ध का वर्णन क्यों करता है? हम अपनी अगली चर्चा में इसके बारे में बात करेंगे।

लेकिन अध्याय 19 फिर पहले परिणाम के साथ समाप्त होता है फिर से अध्याय 19 श्लोक 11 प्रकाशितवाक्य में एक नया खंड शुरू करता है, छवियों की एक श्रृंखला, दृश्यों की एक श्रृंखला, जो दर्शाती है कि पारौसिया, या यीशु मसीह के आगमन पर क्या होता है। यहां 19:11 से 21 में पहला दृश्य, अंतिम निर्णय को चित्रित करता है जो मसीह के आने का परिणाम होगा। अब, अभी भी कुछ सफ़ाई करना बाकी है।

हम देखेंगे कि अध्याय 20 में अभी भी न्याय के दृश्य होंगे, लेकिन पहले से ही, हम सभी बुराइयों का अंतिम निर्णय पाते हैं, सभी बुराइयों को दूर करते हुए, अध्याय 21 और 22 में एक नई रचना के उद्भव के लिए रास्ता तैयार करना शुरू करते हैं।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह प्रकाशितवाक्य 19:11-21 पर सत्र 25 है। योद्धा का वर्णन तथा युद्ध अथवा न्याय का वर्णन।

